किशन कारीगर

₹150
ISBN 978-93-89100-94-5
9 789389 100945
Sahityapedia .com

कुछ अनसुनी

किशन कारीगर

कुछ अनसुनी

किशन कारीगर

Sahityapedia
.com

Published by:
Sahityapedia Publishing
Noida, India – 201301
www.sahityapedia.com
Contact - +91-9618066119, publish@sahityapedia.com

Copyright © 2023 Kishan Karigar
All Rights Reserved

First Edition - 2023
ISBN - 978-93-89100-94-5

This book is published in its present form after taking consent from the author & all reasonable efforts have been made to ensure that the content in this book is error-free. No part of this book may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electrical, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the publisher.

The publisher of this book is not responsible and liable for its content including but not limited to the statements, information, views, opinions, representations, descriptions, examples, and references. The Content of this book, in no way, represents the opinion or views of the Publisher. The Publisher does not endorse the content of this book or guarantee the completeness and accuracy of the content of this book and does not make any representations or warranties of any kind. The Publisher does not assume and hereby disclaim any liability to any party for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions in this book, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause.

अपनी बात

शौकिया तौर पर ही लिखना शुरू किया और शुरूआती दिनों में तो लेखन कार्य की कठिनाईय उसकी बारीकियों से लगभग अपरिचित सा ही था। बारहवीं उतीर्ण करने के बाद से ही रूची पूर्वक पत्र पत्रिकाएँ शौकिया तौर पर पढ़ता था। हालांकी मैं विज्ञान का छात्र था और साहित्यिक चीजों से कम ही वास्ता रहा, लेकिन विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ जरूर पढ़ता था। कई लेखन बेहद अच्छे भी लगते, फिर लेखक का नाम पढ़ता और सोचता की काश हमारा नाम भी इनकी तरह पत्रिकाओं में छपता! मैं भी कुछ लिख पाता लोगों तक अच्छे विचार पहुँचा पाता बस यही सब सोचकर लिखना शुरू कर दिया। शुरूआती दौर में एक श्रोता के रूप आकाशवाणी में चिट्ठीयाँ लिखना शुरू किया जो बाद में कई केंद्रों से प्रसारित भी हुआ और अपनी कानों से सुनकर विश्वास जगा की मैं भी लिख सकता हूँ। काँलेज के दिनों में कुछ पंक्तियाँ लिखता और यार दोस्तों को सुनाता तो कोई सुनकर चाबस्सी देता तो कई हँसी भी उड़ाता। लेकिन इस सब की परवाह किए बगैर मैं लिखता रहता।

ग्रेजुएशन करने के बाद सन् 2006 ई. में पत्रकारिता की पढ़ाई के लिए मैं दिल्ली पहुँचा फिर प्रशिक्षण इंटर्नशिप के दरमियान बतौर प्रशिक्षु पत्रकार लिखने की बारीकियों को निखारता चला गया। उस वक्त सम सामयिक पत्रिकाओं, दैनिक अखबार में हमारी लिखी पाठकीय प्रतिक्रियाएँ प्रकाशित होने लगी। नई दिल्ली में ही मैं बतौर पत्रकार समाचार लेखन, संपादन, रिपोर्टिंग कार्य से जुड़ गया। फिर आकाशवाणी, टी वी चैनलों, दैनिक अखबार में कार्य करने लग गया।

नियमित लेखन करता रहा और पाठकों की सराहना पाकर हिंदी मैथिली में लिखने लगा, बाद में बांगला अंग्रेजी भाषा में भी लिखना शुरू कर दिया। आभासी पटल के माध्यम से मुझे विभिन्न लेखकों, पाठकों से जुड़ने का अवसर मिल गया। हमारी लिखी हास्य व्यंग्य, यथार्थपरक, सामयिक आलेख, शेरो शायरी पर पाठकों से मिली जबरदस्त सराहना से हमारे लेखन को और मजबूती मिला।

मैं साहित्यपीडिया टीम का हृदय से बहुत आभारी हूँ जिन्होने हमारी लिखी कविताओं को असंख्य पाठकों तक पहुँचाने के लिए पुस्तक प्रकाशन लायक समझा। आप सभी पाठकों साहित्यप्रेमीयों से गुजारिश है की प्रस्तुत काव्य संग्रह 'कुछ अनसुनी' एक बार अवश्य पढ़ें। इस संकलन में यथार्थ परक, हास्य व्यंग्य, सामयिक और मार्मिक कविताएँ हैं। जिसमें मानवीय सरोकार के पहलुओं की भी चर्च है। उम्मीद है की आप सबको कुछ अनसुनी कविता संग्रह बेहद अच्छी लगेगी और साहित्य की सभी विधाओं का रसास्वादन कर सकेंगें।

भवदीय

- किशन कारीगर (मूल नाम- डॉ. कृष्ण कुमार राय)

14 जून 2023

नई दिल्ली.

कवि परिचय

कवि परिचय :- किशन कारीगर (मूल नाम- डॉ. कृष्ण कुमार राय)

जन्म :- 5 मार्च 1983ई. (कलकता मे)।

शिक्षा :- पीएच.डी (शिक्षाशात्र), एमएमसी (मास कम्युनिकेशन), एम्.एड, बी.एड, पि.जी.डिप्लोमा (रेडियो प्रसारण)।

मैथिली/हिंदी/ बांग्ला मे किशन कारीगर उपनाम से लेखन। हिंदी/मैथिली मे लिखित नाटक आकाशवाणी से प्रसारित। दर्जनो हास्य कथा, कविता, लघु कथा और राजनीतिक आलेख, विभिन्न पत्र पत्रिका मे प्रकाशित। विभिन्न प्रिंट/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संगठन जैसे – (आकाशवाणी, चैनल१, टीवी १००, दूरदर्शन, खोज इंडिया, अमर भारती, पंजाब केसरी) मे पत्रकारिता कार्यानुभव।

संप्रति :- एस. एच. डी. काँलेज हाइर एजुकेशन (गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय से मान्यताप्राप्त) में सहायक प्रोफेसर (शिक्षा) के पद पर कार्यरत और मिथिलांचल टुडे (मैथिलि पत्रिका) के (संस्थापक-संपादक)।

प्रकाशित कृति :- किछु फुरा गेल हमरा (काव्य संग्रह), ठहक्का (हास्य कथा संग्रह)

शीघ्र प्रकाश्य :- हिंदी में – रहगुजर (ग़ज़ल संग्रह), कुछ अनसुनी (काव्य संग्रह), हाई मेरी तोंद (हास्य कथा संग्रह),

मैथिलि में :- सिंगार-पेटार (ग़ज़ल संग्रह), किछु कहब-किछु सुनब (काव्य संग्रह), बांग्ला में- मोनेर कोथा (काव्य संग्रह)

अनुक्रमणिका

ज़िस्म के लुटेरे (मार्मिक कविता) 7
जमाना नहीं शराफ़त का (सामयिक कविता) 9
बूढ़ा बरगद का पेड़ बोला (मार्मिक कविता) 11
किसे फुर्सत है? (मर्मस्पर्शी कविता) 13
चंदा मामा (बाल कविता) 15
कैसे वोट बैंक बढ़ाऊँ? (हास्य कविता) 17
बच्चों के पिता 19
पिता (मर्मस्पर्शी कविता) 20
जिम्मेदारी और पिता (मार्मिक कविता) 21
दलाल ही दलाल (हास्य कविता) 22
अदबो ईल्म सी उर्दू 23
ईमानदार की मौत हो जाती है (मार्मिक कविता) 24
सच्चा प्रेम कहाँ है? 25
मैं भी चुनाव लड़ूँगा (हास्य कविता) 26
मैं भी चापलूस बन गया (हास्य कविता) 28
दिल किसी का दुखाया (मार्मिक कविता) 30
बँटवारा (मार्मिक कविता) 31
लुगाई और मँहगाई (हास्य कविता) 34
चैनों-अमन की बातें अब कौन करता? 36
घोटालेबाजों की मेरीट लिस्ट (हास्य कविता) 37
यादों में हम खो गए (मार्मिक गीत) 39
होली 40
ढूँढती है निगाहें (मार्मिक कविता) 42
सफ़र है बाकी (संघर्ष की कविता) 44
हाई रे मेरी तोंद (हास्य कविता) 45
मुझे भी जीने दो (भ्रूण हत्या की कविता) 47
किशन कारीगर के चुनिंदा शेर 49

ज़िस्म के लुटेरे (मार्मिक कविता)

यहाँ भी वहाँ भी कुछ उधर भी
सफेदपोश चादर ओढ़े कुछ लोग।
ये खरोंच डालेंगे तेरे जिस्म
हर कहीं बैठें हैं जिस्म के लुटेरे!!

क्या कर लोगे तुम इनका?
गिरफ्तार हुए भी तो?
ऊँची पहुँच है इनकी
ये जमानत पे छुट जायेंगे।

सिर्फ अपने घर के बहू बेटियों की
इज़्ज़त इन्हें नज़र आती है।
दुसरे की तो रात दिन इन्हें
जिस्म ही दिखाई पड़ती है!

अपनों की इज़्ज़त करते
सरेआम दूसरों की जिस्म खरोंचते!
एसा फर्क क्यूँ वे ही बताएं
पैसों की खातिर धर्म ईमान तक बेचते!

क्या किसी मासूम किसी बेबश की
इज़्ज़त आबरू ईमान की इज़्ज़त नहीं?

अर्धनगन हुई जैसे दिखतें हो उसके जिस्म,
उस अबला की आबरू को ढकना इनका फ़र्ज़ नहि?

अय्याशी के नशे में मकबूल हुए
एसे लोगों को सराफत नहि भाता।
पैसा ही इनके लिए सब कुछ है
हर कहीं इन्हें जिस्म ही नज़र आता।

खुदा न करे कहीं एसा हो?
तुम्हारें बहू बेटियों की आबरू लूट जाये?
ऊँची पहुँच हो पैसो की ताकत होगी
मौके वारदात कुछ काम न आये?

औरत तो औरत होती है ज़रा सोचो
अपने घर की हो या पराये घर की।
आलिशान बंग्लें या झोपरपट्टी में रहनेवाली
इज़्ज़त आबरू तो हर एक की है?

कारीगर तुम किसके पास चीखोगे चिल्लाओगे
हबश की बधोशी में ये कुछ नहि सुनेगें।
शराफत की चादर ओढ़े कुछ लोग
हर कहीं बैठें हैं जिस्म के लुटेरे।

जमाना नहीं शराफ़त का (सामयिक कविता)

तुम किसी के साथ विनम्रता से पेश आओ
वे तुम्हें बुद्धजिल कमज़ोर समझेंगें।
वेबज़ह चलती ट्रेन से दे देंगें धक्का
अब तो जमाना नही रहा शराफ़त का!

अपने फायदे के ख़ातिर
अब लोग बहुत चालाक हो गए।
हमलोग शराफ़ती करते रहे
और वे चुपके से सबको ठगते रहे।

हर कोई अपने फायदे में है लगा हुआ
रिश्ता नाता मानवता ये सब तो।
अब किताबी बातें हो गई
जमाना नहीं शराफ़त का।

अब शारीफ़ बने रहोगे तो
लोग तुम्हें वेबकूफ़ समझेंगें।
चुपके से करेंगें चालाकीयाँ
तुम्हें तो वह मिनटों में ही ठग लेंगें।

शराफ़त से किशन, अब कोई नहीं सुनता?
तुम्हारे हितों के बारे में न कोई सोचता?
उठो जागो संघर्ष करो अपने अधिकारों से
वरना जमाना नहीं शराफ़त का।

शराफ़त से कितना भी गिड़गिड़ाओगे
बिना लड़े तुम्हें कोई अधिकार नहीं मिलेगा?
कानूनी पन्ने तो महज़ दिखावा है.
इतना समझ लो जमाना नहीं शराफ़त का।

बूढ़ा बरगद का पेड़ बोला (मार्मिक कविता)

मेरी ही टहनियों को काटकर
छाँव की तलाश में भटक रहे लोग।
कराहते हुए कहीं यहीं पर जैसे
बूढा बरगद का पेड़ बोला।

कुछ याद है "किशन" की सभ भूल गए?
अपने दादाजी की अंगुलियाँ थामे
मुझसे मिलने तुम भी आते
वो मुझसे और तुम चिड़ियों से बतियाते।

मेरी डाल पे बैठे
वो चिड़ियों की टोली।
हम सभी अरोसी-पड़ोसी बन जाते
बतियाते और कितनी खुशियां बाँटते।

तुम सभी ने काट दी मेरी टहनियाँ
अब उन चिड़ियों के घर भी उजाड़ दिए!
दर्द से कराह रहा मैं कब से
पर कोई नहीं सुनता!

अब कोई भी ईधर को नहीं आता
न ही कोई पेड़ लगाता।

कराहते हुए यहीं पर जैसे
बूढा बरगद का पेड़ बोला।

ठंडी हवा, मीठे फल, धूप-छाँव
सब कुछ मैं तुम सबको देता।
खुद जहरीला कार्बन पीकर रह लेता
पर शुद्ध ऑक्सीजन सभी को देता।

फिर भी अंधाधुंद बृक्षों को काट रहे
प्रकृति की दी हुई चिजें उजाड़ रहे।
पर्यावरण सरंक्षण की कौन सोचे?
जैसे बूढा बरगद का पेड़ बोला।

किसे फुर्सत है? (मर्मस्पर्शी कविता)

हर कोई भाग रहा किसे फुर्सत है?
शहर बन गया है तमाशाबीन
कोई दर्द से चीखता-कराहता
पर कोई करता तक धिनाधीन।

कोई दौलत के पीछे तो
हर कोई शोहरत के पीछे।
बेहताशा इस क़दर भाग रहा
की किसे फुर्सत है?

इस भागम-भाग में तो लोग
अपने आप को भूल गए?
रिश्ते-नाते सब ईधर-उधर
रिश्तों की मर्यादा टूटकर बिखर गए।

बेशुमार दौलत की चाहत में
कुछ भी करने को तैयार।
अब तो फ़र्ज़ अदायगी भी याद नहीं
कौन समझे, किसे फुर्सत है?

बिकास की अंधी दौर में हम
प्रकृति को ही छेड़ बैठे।

प्राकृतिक बिपदा दस्तक दे रही
फिर भी न सोचे, किसे जरूरत है?

मनुष्य अपने ही बिनाश को है बेताब
वेबज़ह भी, हर कोई भागम-भाग।
प्रकृति के साथ चलने में ही भलाई
मगर कौन सोचे, किसे फुर्सत है?

अपनेपन की बजाय, अब तो लोग
फ़िल्मी ठुमको में खुशियाँ तलाशते।
आस-पड़ोस के हँसी-ठहाके सब गायब
लाफ्टर और कॉमेडी नाईट से जी लेते।

क्या हो गया उन सभी को?
अपने ही सामजिक कर्तब्य भूलकर।
मनुष्य और मानवता सब पीछे छूटे
"किशन" किससे कहे, किसे फुर्सत है?

चंदा मामा (बाल कविता)

चाँदनी रात में खिलखिला के हँसते हो
कितने उजले दाँत हैं आपके प्यारे मामा?
मैं आपके लिए नया टूथ ब्रश खरीदूँगा
मेरे घर भी आओ ना चंदा मामा।

मेरी माँ मुझसे कहती है की
चंदा मामा अपने घर आएंगे।
तुम्हें मेला घुमाने ले जाएंगे
उनके साथ रहना गरम गरम जलेबियाँ खिलाएंगें।

देखो चिंटू ईधर आ जाओ
जल्दी कुछ मीठा ले आओ।
चाँदनी रात में आए चंदा मामा
देखो वो तुम्हें देखकर कितना मुस्कुराएँ।

हम सबके प्यारे मामा
कहाँ छुपते फिरते? जल्दी घर आना।
सभी बच्चों के संग आप भी खेलना
प्रोमिस करो खिलौने लेकर आना।

अच्छा चिंटू तुम कहते हो तो?
आज मैं एसा ही करूँगा।

ढेर सारे खिलौने के संग
चमचमाती खुशियाँ भी लाउँगा।

मामा ये तो बता दो की आप
कहाँ छुपते फिरते रहते हो?
जब भी आपको देखता हूँ
आप तो मंद मंद मुस्कुराते रहते हो।

सच में चिंटू पिंटू आ जाओ तुम सभी
संग मिलकर हँसी खेल करतें हैं।
मुस्कुराना ही तो अपना काम
मैं हूँ सभी प्यारे बच्चों के चंदा मामा।

कैसे वोट बैंक बढ़ाऊँ? (हास्य कविता)

मुझे तो बस यही चिंता सत्ता रही
की बजी अब चुनाबी घंटी?
मैं कैसे अपना वोट बैंक बढ़ाऊँ
सत्ता की गलियारों में फिर कैसे ऊधम मचाऊँ?

चुनावी घोषणापत्र में
कितने अच्छे-अच्छे ऑफर
कोई ऑफर छूटे तो नहीं
भोली-भाली जनता को कैसे समझाऊं?

फ्री वाला ऑफर तो बहुत हो लिया
क्या करूँ? जो इनको ललचाऊँ?
वोट सिर्फ मुझे ही देना भाई
हर किसी को यही बात समझाया।

हम तो पहुँचे ही थे अभी
चुनावी ऑफर लेकर जनता के पास।
इतने में ओ विपक्षी भी आ धमके
हमें झूठा बतलाकर, अपनी हवा-हवाई में लगे।

मैं उसे, वो मुझे झूठा कह रहा
चुनावी भाषणो से जनता को लुभा रहा।

इन लुभावने घोषणाओं से कैसे भरमाऊँ?
मैं कैसे अपना वोट बैंक कैसे बढ़ाऊँ?

जनता का कुछ भला नहीं?
सिर्फ़ दिखावे के रंग-बिरंगे घोषणाएं।
कुर्सी पे क़ाबिज़ हो सकूँ कैसे?
नेता हूँ, समझो हमारी भी जनभावनाएं।

हर एक का विकास करूँगा
सिर्फ़ कहता, पर करता कभी नहीं?
सत्ता मिले तो, कैसे अपनी सम्पति बढाऊँ?
मैं कैसे अपना वोट बैंक बढ़ाऊं?

बच्चों के पिता

रूठें हैं बच्चें आज उनको मनाने,
ढेर सारे खिलौने लेकर आया है पिता।

अच्छा तुम्हें और क्या चाहिए? बताओ ना?
बच्चों को मनाते हुए पुछ रहा है पिता।

बच्चों की कई एसी शरारतों को,
डांट फटकार कर फिर भुला देता है पिता।

हर वक्त बच्चों की खुशियों में ही,
अपनी खुशियाँ ढूँढता फिरता है पिता।

वक्त बेबक्त बच्चों को हिदायतें देते रहता
बच्चों की क़ामायाबी चाहता है हर एक पिता।

लाख तक़लीफ़े ही क्यूँ ना हो फिर भी?
सीधे मुँह अपने बच्चों से कह नहीं पाता है पिता।

बिटीया तो अब सयानी हो गई
डोली में बिठा कैसे बिदा कर पाएगा पिता?

बच्चें पैरों पे खड़े हो खुशहाल ज़िदंगी हो,
यही चिंता और दुआएं करता है पिता।

पिता (मर्मस्पर्शी कविता)

घर परिवार की जिम्मेदारीयों को निभाता रहता
हर घर में वो जो है पिता।

बच्चो बीबियों की खुशियों के ख़ातिर
अपना हर ग़म छुपा लेता है पिता।

जी तोड़ मेहनतक़शी करता वो
की उसके परिवार खुश रह सकें।

परिवार की खुशियों के ख़ातिर
क्या क्या नहीं करता है पिता?

जैसे ही उसे बुलाता है पापा कोई?
खुशनुमा एहसास से भर जाता है पिता।

पिता बनते ही उसकी जिम्मेदारी हो जाती शुरू
बच्चों की खुशियों मे होने लगती उसकी भी खुशी।

बच्चों के हर ज़िद पूरे करता है पिता
अपनी जरूरतें अब सिर्फ़ ख़्वाहिशों मे दबा लेता है पिता।

घर कितना मायूस सा लगता?
जब घर में नहीं होते हैं पिता?

उन्से पूछो तकलीफ़ कभी तुम सभी?
जिनके सिर से उठ गया साया पिता का?

जिम्मेदारी और पिता (मार्मिक कविता)

जिम्मेदारीयों के बोझ तले दबा हुआ पिता
बच्चों की ख़ातिर फिर भी खुश रहता है पिता।

बीबी से भी कभी शिकायत नहीं कर पाता?
बीबी बच्चों के लिए हर पल जीता है पिता।

घर परिवार की जिम्मेदारी मे भागमभाग
हर मेहनतकशी करता है जो पिता।

घर का चूल्हा जले दो वक्त की रोटी मिले
खून पसीने एक कर देता है पिता।

क्या उसकी अब अपनी कोई खुशियां नहीं?
शायद बच्चों की खुशियों में ही खुश हो लेता है पिता।

घर परिवार खुशहाल रहे यही जिम्मेदारी निभाने
तपीश धूप या बारीश हो मेहनत मजूरी करता है पिता।

कभी सोचा तुमने जिम्मेदारी है इक परिवार
यहि सोच कितनी तकलीफें उठाता है पिता।

जिम्मेदारी से वह कभी भाग भी न पाता
घर परिवार की चिंता हर पल है उसे सताता।

वीबी बच्चे बूढ़े माँ बाप सब खुशहाल रह सके
अपने कंधे सारी जिम्मेदारी लेता है पिता।

पूछो उनसे की कितनी तकलीफें हैं?
जिनके घर मे न साया है पिता का।

दलाल ही दलाल (हास्य कविता)

मीडिया भी दलाल मुल्क़ के हुक़्मरान भी दलाल
कौन करेगा इनके काले कारनामों का पर्दाफाश?

न्यायपालिका कार्यपालिका भी बन गए दलाल?
सुना है मोटी कमाई के चक्कर मे जज साहाब भी दलाल?

मंत्री संत्री या हेडमास्टर हो या चपरासी?
जनसेवक तो बन बैठा दलालों का सरदार?

पुलिस दरोगा वकिल हो गए मालामाल?
जहाँ देखो वहीं दलाल ही दलाल।

किससे करोगे तुम फ़रियाद? कौन उठाएगा आवाज़?
मीडिया तो बन गई दलालों का दलाल?

गवाह ख़रिदे बेचे जा रहे? कोर्ट कचहरी भी बिके हुए?
देशद्रोही बना झूठे मुकदमे मे बेकसूर पीसे जा रहे?

खुदा ख़ैरियत रखे लोगों का? देखो तो हर कहीं?
लूट खसोट वबाल मचाए दलाल ही दलाल।

अदबो ईल़्म सी उर्दू

ज़शन ए उर्दू
अदबो इल़्म सी उर्दू।

चैनो अमन की क़हक़शां है उर्दू
हर मुक़्तिलिफ़ की गंगा जमुनी तहज़ीब हो उर्दू।

जबसे मालूमात हुआ की मीठी जुवां है उर्दू
लिखे हैं चंद अलफाज़ 'कारीगर' ने भी? इशके ए उर्दू।

ख्वाहिशें की, हर सामयिन की जिक्र हो उर्दू
कहता हूँ कई मरतबा देखो कितना लज़ीज है उर्दू।

हुस्ने नूर हो या दरियादिली, तंगहाली के हो कहीं चर्चे?
मखमली सी ईठलाती बलखाती जुबां जो उर्दू।

ना किसी से कोई भेदभाव ना कोई ख़ुदग़र्जी?
हर किसी का एहतराम करती सबका इस्तक़बाल हो उर्दू।

कितनी मीठी जुवाँ है उर्दू?
लफ्ज़ों की नक्काकशी है उर्दू।

तहजीब़ के दरख्वास्त सिखलाती है उर्दू
हिदीं उर्दू मिल जाए फिर गुलेगुलज़ार होती महफ़िल।

कहक़शाँ हो या ग़ज़लों की महफ़िल
खुशनुमा तरन्नुम बिखेरती है उर्दू।

इसांनी क़वायदे रूहानियत सी अदायगी
चैनो अमन, ईशक, दर्दे शिकन की बातें करता उर्दू।

ईमानदार की मौत हो जाती है (मार्मिक कविता)

जहाँ सौ मे नब्बे लोग झूठें हो?
स्वार्थ से भरा झूठ ही झूठ हो?

फिर कौन करेगा ईमानदारी की बात?
झूठ के आगे ईमानदार की मौत हो जाती है?

इस स्वार्थ भरे युग मे ईमानदारी की बात?
मतलब दर दर की ठोकरें खाओ?

जिससे भी कहो ईमानदारी की बात
वही हमे वेबकूफ समझता है।

नियम क़ायदे और सच्ची बातों का गला घोंट दिया जाता?
अब तो झूठे गवाह बनाकर भी हरा दिया जाता है?

ईमानदारी से रहो तो लोग चैन से जीने नहीं देते?
जबरदस्ती भी ज़ुल्म यातनाओं से डरा दिए जाते?

झूठे लोग ही हमेशा मालामाल रहते?
ईमानदार तो भूखे ही मर जाए?

कोर्ट कचहरी सब बिके हुए
न्याय व्यवस्था के जज भी बिक गए।

झूठे गवाह भी बिकते और ख़रीदे जा रहे
बेबश ईमानदार की तो मौत हो जाती है?

सच्चा प्रेम कहाँ है?

कौन ढूँढेगा? किसको ख़बर है?
सच्चा प्रेम ना जाने अब किधर है?

दिल क्यूँ ना मिलते अब?
हृदय मे प्यार अब किधर है?

प्यार में इतनी शर्तें
आहें भी न भरते?

ज़िस्मों का जबसे चलन हो गया
प्यार भी कैसा बदरंग हो गया?

दिल से मुहब्बत अब करता कहाँ कोई?
किससे पुछूँ? अब सच्चा प्रेम कहाँ है?

प्रेम के बहाने जिस्मानी नुमाईशे हो रही?
सोचो ज़रा की? क्या एसा करना सही?

प्रेम के लिए तो रूहानी सासें ही लगती
जिस्मानी फरमाईश तो सिर्फ बहाना है।

झूठ फरेब मर्डर न जाने क्या क्या?
प्रेम करने के बहाने होने लगे।

धन दौलत जबानी रूप निखार
ये सब बन गए अब प्यार का इज़हार।

रूहानी सा अपनेपन का एहसास ना रहा?
अब तो न जाने सच्चा प्रेम कहाँ है?

मैं भी चुनाव लड़ूँगा (हास्य कविता)

सुना बै बहुत फाइदें है?
चुनाव ही तो जीतना है।
बहुत जल्द मालामाल हो जाउँगा?
फिर तो मैं भी चुनाव लड़ूँगा।

धर्म जाति के नाम पर लोगों को लड़बाउँगा?
लगे हाथ दंगे भी भरकवा दूँगा?
है मुझे नेतागिरी जो करनी,
क्योंकि मै भी चुनाव लड़ूँगा?

देश बिक जाए तो बिक जाने दो?
या जनता बिलखकर भूखे मर जाए?
अपना ही जेब भरना चाहिए बस,
सरकारी खजाने भी साफ कर जाउँगा?

लोगों को हिंदू मुस्लिम मे उलझाए रखूँगा,
ये आपस मे ही लड़ कट मरेंगे?
फिर न मांगेगा कोई रोजगार?
मैं बढ़ते बेरोजगारों की लाइन लगवा दूँगा?

ना प्रतियोगिता परीक्षा जैसी तैयारी?
ना ही पढ़ने लिखने सा कोई झंझट?

लोगों को भरमाकर अपने तरफ कर लो,
झूठ फरेब से ही चुनावी मैदान मे कूद पड़ो?

जुमलों की झड़ी से देश का विकास करूँगा?
सब कुछ फ्री के नारे भी लगवा दूँगा?
बस मंत्री पद ही तो चाहिए मुझे,
वोट जरूर देना अबकी मैं भी चुनाव लड़ूँगा?

मैं भी चापलूस बन गया (हास्य कविता)

आखिर क्या करता मैं? कहाँ मारा फिरता?
किसको समझाता कहाँ नहीं धक्के खाता?
ईमानदारी से हश्र एसा हुआ की?
अब मैं भी चापलूस बन गया।

इन चापलूसों की ही तो चलती है?
दबे पांव सबसे बनती भी है?
इनकी चापलूसी सर्विस ट्वंटी फोर आवर,
अब रिजल्ट सीट भी तो दुबारा बनती है?

ईमानदारी से न कोई बात ही सुनता?
चक्कर काटो फिर भी कोई काम न होता?
चापलूस भैया को ना रोको टोको?
वरना वो भी मुझको ही दुत्कारता?

कब से कह रहा था मैं,
की मीनटों में काम करबा दूँगा?
तुने मेरी एक बात भी न सुनी?
अब देखो तुझे कितने चक्कर कटवाउँगा?

तू ईमानदारी की बात ही क्यूँ करता है?
मेरी हाईपर टेंशन बढाता है?

अब भी तूं समझ ले किशन,
बिना चापलूसी के प्रमोशन भी नहीं मिलता है?

अब मेरिट से कुछ नहीं होता?
ना कोई तेरी बात सुनता?
लल्लू पंजू को ही आफर मिलता,
मंत्री संत्री भी चापलूस को ही चाहता?

एसे मे फिर मेरा क्या होगा?
चापलूस भैया ने चुपके से कहा,
चढावा चढ़ाते रह और मेरी बात सुना कर
फिर तो अब 'किशन' भी चापलूस बन गया?

दिल किसी का दुखाया (मार्मिक कविता)

दिल किसी का दुखाया
मैने दिल किसी का दुखाया।
किशन था बहुत ही नटखट
नादानगी में उनको बहुत सताया।।

जिसने झुलाया था हमें
अपनी बाहों की झुलों मे।
जो बनके घोड़ा बिठाकर पीठ पर अपने
इंसा कोई हँसाया करते थे हमें।।

हर पल हँसाया था जिसने हमें
उसे हमने बहुत रूलाया।
नादानगी में मदहोश किशन
दिल किसी का दुखाया।।

रूठ जाता था कभी तो मा मुझे मनाती
बिठाकर गोद मे हमे खूब हँसती खिलखिलाती।
रोता था जब कभी भी सुनाकर लोरियाँ
अपने आँचल तले हमे सुलाती।।

जो हँसाती थी हर पल मुझे
उसको हमने बहुत रूलाया!
नादान ही तो था किशन
मैने दिल किसी का दुखाया।।

बँटवारा (मार्मिक कविता)

आज भाइयों के बीच कहा सुनी हो रही
क्योंकि बँटवारा जो हो रहा है
लेकिन ये लड़ाई वो नहीं?

जब पिता कुछ खाने को लाते थे
और ये लड़ते थे झगड़ते थे।
और बाँटकर खाते थे।

कभी एक ही थाली में
दोनों बैठकर खाते थे।
एक दूसरे को स्नेह से निहारते थे
उफ़! ये बँटवारा! आज
एक दूसरे को देखना भी नहीं चाहते।

बाबूजी बीमार हैं
उनका कोई आस नहीं?
दोनों बोलते पिता अभी उनके हिस्से में नहीं है
बुढापे में एक लोटा पानी नसीब नहीं
उफ़! ये बँटवारा! आज
पिता भी बँट गए।

छोटी बहू आज झल्ला रही है
तो क्या बड़की बहू किसी से कम है

और ये कलह बढ़ता ही जा रहा
उफ़! ये बँटवारा! आज
पिता संताप से मर रहे।

आज बूढ़े के आँखों से झर झर आँसू गिर रहे
लेकिन वो किसे बुलाए वो तो हैं बँटे हुए।
बराबर बाँटने के बाद भी उनके नजर में चढ़े हुए
उफ़! ये बँटवारा! संतान के नजर में
पिता बेईमान हो गए।

हमें आजादी से जीने तो दो
सुख चैन से मरने तो दो
बूढा कातर हो मिन्नते कर रहा
उफ़! ये बँटवारा! आज
कपूत उन्हें जबरन गंगा लाभ करा रहे।

आज मन के हारे ग़म के मारे
बूढ़े की जान एक ही डुबकी से निकल गए।
ये सुनकर सबके आँखों में आँसू आ गए
उफ़! ये बँटवारा! "किशन"
सबको अंतिम संस्कार के लिए बुला रहे।

ये जमाने का दोष या संस्कार का
जो माँ – बाप का सत्कार नहीं करते?

जीते जी बात बात में दुत्कारते
उफ़! उसे मारने या मरने के बाद
पाँच गाँव को कचौड़ी जलेबी खिलाते।

मैं किससे कहूँ उस बूढ़े का दुःख?
जो संतान के लिए सदा ढूँढता रहा सुख
आज उस पिता के अकाल मृत्यु देखकर!
"कारीगर" हाथ जोड़कर कह रहा
मत करो ऐसा बँटवारा!
मत करो ऐसा बँटवारा!!

लुगाई और मँहगाई (हास्य कविता)

अपने मित्र को देखते ही?
मैं भड़क उठा और बोला
छोटे भाई बन मेरी लुगाई को घूरने से अच्छा?
की तूं उसे ले ही भाग।

मेरे मित्र ने पूछा, अच्छा ये तो बता,
एसी कौन सी आफत आ गई है?
मै बोला ये आफत नहीं तो और क्या?
अपनी लुगाई से पीटते अब तो गंजे होने की नौबत आ गई है।

मैं और ज्यादा पीटूं, इससे अच्छा की?
तूं ही इसे ले भाग!
जल्दी कर भाई, कितने दिनो बाद,
तेरी किस्मत खुली आज।

मित्र बोला जी तो मेरा भी करता है की?
आज इन्हें कहीं दूर ले भागूँ?
रहम कर इस बेरोज़गार भाई पर,
दिखता नही तुझे कितनी मँहगाई है?

मैं इन्हे ले भी भागा तो?
सब लोग यहि कहेंगे किशन

की ये तेरी नहीं फिर क्यों यँहा?
ये तो किसी और की लुगाई है?

कैसी आफत पड़ी मँहगाई और लुगाई?
हो दोनो जैसी जुड़वा बहन?
सरेआम बाज़ार मे लूट गया 'किशन'
बत्तिस्सी दिखावे तूं मना ले जशन?

चैनों-अमन की बातें अब कौन करता?

चैनों-अमन की बातें अब कौन करता?
उसे तो उल-जलूल सा लगता।

हमदर्द अब रह गए ही कितने?
क्या कहे "किशन" हर कोई झूठी आहे भरता।

जमाना भी खुदगर्ज़ कितना हो गया?
भाई-भाई का ना रहा।

ख़ुदा को भी आती हंसी हमपे
मौकापरस्ती में इतना जो फ़ितरतमंद हुआ।

कोई किसी की फरियाद ना सुनता?
कौन भला, वेबक्त किसे याद करता?

अपनेपन की सिश्कियाँ दफ़न सी हो गयी
इंसानियत की बात तो, अब बेमानी सी लगने लगी।

जिसे देखो वही दौलत का दीवाना बना हुआ
भला फिर इंसानी क़वायदें क्यूँ अच्छी लगेली?

दौलत की लालच में तो झूठ फरेब किलींग
लोगों के हरक़तों मे शमा गई है।

झूठी दौलत शौहरत के चक्कर में सब लगे हुए
भला अब चैनो अमन की बातें कौन करता?

घोटालेबाजों की मेरीट लिस्ट (हास्य कविता)

सभी एक दूसरे पे चिल्ला रहे थे
आखिर क्यों नहीं मैं?
बनी है घोटालेवाजों की मेरिटलिस्ट
इस लिस्ट में मेरा नाम नहीं?

एक ने दूसरे को धकियाआ
चल हट जा पीछे।
मैंने तो इतने सारे घोटाले किए
फिर भी इस लिस्ट में मैं नहीं?

जल्दी से इस लिस्ट में सुधार कर
नहीं तो ये समझ ले फिर
मेरे हस्ताक्षर के बगैर कैसे मैं?
सरकारी टेंडर पास होने दूँगा?

किसने कह दिया की भ्रष्टाचारमुक्त भारत?
ये तो सिर्फ झूठी अफ़वाह है।
सिर्फ़ एक बार मंत्रिपद मिलने दे
देख कितनी जल्दी मैं अपनी जेब भरूँगा।

क्यों तुम सभी काले धन की रट्ट लगा रहे?
नेताजी को बेमतलब बदनाम किये जा रहे।
बता तूँ, किसलिए राजनीती में आया मैं?
एक घोटाले तेरे नाम कर दूँगा, समझा भी करो।

घोटालेवजी में ही तो मैं बेचैन रहता
अरे बुद्धू तू भी ये नहीं समझता?
जनता की सेवा सिर्फ़ चुनावी घोषणा
जनाधार कैसे बढ़ाऊँ? इसी फ़िराक़ में मैं रहता।

सिर्फ़ एक बार इस घोटाले में
तू मेरा साथ दे दे, फिर देख
पब्लिक से कहना मत कभी
घोटाले की आधी रकम मैं तेरे नाम कर दूँगा।

ऐसा है तो फिर हम सभी मिलकर
दिन-रात घोटाला करेंगे यहीं
घोटालेवाजों की मेरिटलिस्ट में भी घपला
कोई तो बता इस लिस्ट में क्यों मेरा नाम नहीं?

कवि-किशन कारीगर (मूल नाम-डॉ. कृष्ण कुमार राय)

यादों में हम खो गए (मार्मिक गीत)

आप मुझे छोड़कर कहीं चले गए
सच्ची मुहब्बत में नादान कुछ पल रो लिए।

इठलाती.बलखाती आपकी हँसी पैग़ाम.ए.मुहब्बत बन गए
तस्वीर देखकर आपकी यादों में हम खो गए।

आपकी जुदाई में दिन कटता रहा
करता हूँ आपसे मुहब्बत सभी से मैं कहता रहा।

आपकी चाहत में न जाने हम क्या-क्या कर गए?
तस्वीर देखकर आपकी यादों मे हम खो गए।।

मिलकर आपसे दिल मे हुई एक छुवन
देखकर आपको खिल गया मेरा मन।

अपने चाँद का हूँ मैं चकोर
चाँदनी रातों में करते हम दोन झिकझोर।।

सच न हुआ सपना कोई नहीं है अपना
सपनों की दुनियाँ मे हम रह गए।

आपकी यादों के सहारे ही खुश हो लिए
तस्वीर देखकर आपकी यादों मे हम खो गए।

होली

आ गई खुशियों की त्योहार होली
सबने सजाई अपने घर रंगोली।
रंग गुलाल लेकर निकल पड़े
देखो आई है मस्तों की टोली।

रंगो से भर के पिचकारी
एक दूसरे पर डाल रहे।
नाच गाकर एक साथ
खुशियाँ आपस में बाँट रहे.य।

होली है बड़ी निराली
पकवानो से सजी है थाली।
किसीको छोड़ता नहीं है ये
जिसका चेहरा रहता बिना रंगो के खाली।

देखो होली का खेल कैसा
बच्चे बुढ़े सब एक जैसा।
किसी ने पी ली अन्जानें में भंग
तो कोई हो गया है रंगों से बदरंग।

नादनगी के रंग में आज तू भी रंग ले
किशन तू भी थोड़ी भंग चख ले।

किसी छैल छबिली की चुनर रंग दे
मना करे तो फिर अपने कुरते को ही रंग ले।

आई है फगुनाहट की बहार
खुशियों से रंग गया पूरा संसार।
अपने दिल को खुशियों से रंग लो
नाचो गाओ होली का त्योहार।

ढूँढती है निगाहें (मार्मिक कविता)

तुम्ही बताओ न जाने क्यूँ?
दिलो जाँ से मुहब्बत करने वाले
शायद अब कभी ना मिलेंगें
पर कैसे बताऊँ तुम्हें? ढूँढती है निगाहें.

हर एक सूरत में हर कहीं
सिर्फ़ तुम ही नज़र आती हो।
जैसे ही तुमसे कुछ कहता हूँ
ख्वाबों में भी तुम शरमा जाती हो।

कभी रूठना कभी मनाना
इक दूजे को चाहा ही तो था?
इज़हारे ईशक हुई कब क्या बताएं?
किसी का कुछ बिगाड़ा तो नहीं था?

आखिर मार डाला ही हम दोनो को?
फिर भी ना बदली इनकी फिलींग!
कुछ मत कहो ये सब मुहब्बत के दुश्मन
कब्र खोदकर भी करेंगें ऑनर किलींग।

आखिर कब तक एसा क्यूँ?
शानो शौकत से करते रहेंगे आनर किलींग

और कितनो की जान लोगो? कुछ तो बोलो?
फिर भी वही सोचेंगे न बदलेगी इनकी फिलींग?

पुछूँगा कभी खुदा से आखिर क्यों?
इंसा के दिलों में मुहब्बत दी।
पर मुहब्बत के दुशमनो को
इंसानीयत की सीख न दी?

इज़हारे इशक कभी देखा तुमने?
जैसे कुछ कहती थी मेरी निगाहें
इस पार बैठे हम समंदर के उस पार तुम।
शायद अब भी तुम्हें ढूँढती है निगाहें?

सफ़र है बाकी (संघर्ष की कविता)

सफ़र थोड़ा और है बांकी
कुछ दूर और चलले साथी।
मंज़िल दूर है तो क्या?
रास्ते में कहीं तो मिल जाएगी।

ग़मो से मत होना परेशान
असफ़लताओ से तुम मत घबराना।
कोई ताने मारे मत होना तुम हैरान.
संघर्ष करते रहना जब तक हो जाँ।

मेहनत से ही बदलेगी किस्मत
बस ये सोच मेहनतकशी से चल।
लोग यूँ ही तुझपे हँसेंगे
मत घबराना की लोग क्या कहेंगें।

होगा एक दिन तू भी कामयाब
तब लोग तुझे भी देखेंगें सुनेंगें।
खुदबखुद मिल जाएगा जवाब उन्हें
जो वेबज़ह तुझपे हँसते रहेंगें।

दुनियादारी के सफ़र में संघर्ष के काँटे होगें
फिसलेंगें पैर मगर तुम्हें संभलना ही होगा।
अपने दम पे संघर्ष करते रहना
क़ामयाबी की मंजिल जरूर मिल जाएगी।

हाई रे मेरी तोंद (हास्य कविता)

उफ़ हाई रे मेरी तोंद
ये कितनी हिलती डुलती है।
सेक्रेटरी से कितनी बार पूछा
चल ये बता क्या, ये दिखती भी है?

डरते डरते उसने इतना बताया
जनता सालों-साल तक लुटती है।
बम्बई के शेयर बाज़ार की तरह
आपकी तोंद दिनोदिन कितनी चढ़ती है?

तो फिर तूँ ही बता
इस तोंद का मैं क्या करूँ?
इतने खर्च जो किये चुनाव लड़ने में
फिर मैं अपनी जेब ना भरूँ?

सेक्रेटरी को कितना समझाया
की इस तोंद के चर्चे ही मत किया कर।
जनता को सिर्फ इतना बता
भ्रष्टाचार नहीं? कब्जियत से ये ऐसी दिखती है?

मंत्रिपद मिलते ही मनो मुझको
मेरी तोंद में गुड़गुड़ाहट होने लगती।

सरकारी ख़जाने पर कैसे हाथ साफ़ करूँ?
यही तो हर पल चिंता रहती है।

भ्रष्टाचार के कई मिक्सचर मसाले
हमारी इस तोंद में भड़े-पड़े हैं।
उजले कुर्ते से कितना इसको ढके रखा
फिर भी जनता देख ही लेती है।

जनता भी कितनी अवल्ल दर्जे की वेबकूफ
जनसेवक बना हमें पार्लियामेंट भेजती है।
हम तो अपनी सेवा में सरेआम रहते
क्या करें "किशन" ये तोंद इतनी हिलती डुलती क्यों है?

मुझे भी जीने दो (भ्रूण हत्या की कविता)

माँ के पेट में ही छटपटा रही मैं
बेटी हो के जन्म ले रही तो क्या हुआ?
मुझे मत मारो पापा
मुझे भी तो जीने दो पापा।

बेटा ही हो सिर्फ़ इसी चाहत में
हमारी जान लेने पे क्यों अड़े हुए हो?
बेटा बेटी के जन्म में ये फर्क कैसा?
मुझे भी जीने दो पापा।

बीटिया भी तो आपकी ही संतान है
क्यों मुझे गले लगाना नहीं चाहते?
मैं भी तो आपकी सेवा कर सकता?
हर माँ बाप ये क्यूँ नहीं समझता?

बेटा होने के लालच में सब कोई
कोख में ही हमें क्यूँ मार देते हो?
हमारी भी जान है जो भगवान् ने दी
वेबज़ह बेकसूर की क्यूँ जान लेते हो?

बेटा तुम्हारे लिए दहेज लाएगा
पर बेटी ब्याहने में दहेज देना होगा!

बस यही सोचकर ना सब लोग
बेटी को कोख में ही मार दे रहे हो?

बेटा बेटी में फर्क कैसा?
दोनों तुम्हारी ही संतान हैं।
अपनाओ उसे एक जैसा
ना बनो लालच में हैवान जैसा।

बीटिया भी अपने पैड़ों पे खड़ी हो सकती
आफत विपत माँ बाप के काम आ सकती।
अब तो सोच बदलो मुझे मत मारो, जीने दो
मुझे भी दुनियाँ देखने दो पापा।

किशन कारीगर के चुनिंदा शेर

की अब तो सच़ कहने में डर सा लगता है
वेबज़ह कई लोग दुश्मन जो बन जाते।

* * *

मज़हब कौम की ज़द्दो-ज़ेहद मे ना कुछ रखा है?
इंसानियत के गले मिल, वहीं ज़न्नत सा दिखता है।

* * *

कभी उसके अदबो ईबादत का भी एहतराम तो कर।
तुझे क्या पता? वो अपने संग तेरी मक़बूलियत की भी दुआ माँगता।

* * *

खुशियाँ न बिकती कहीं, ना खरीद सकते?
ए बेजूबां दिल तू क्या समझे अपनापन?

तुझसे खुमारियत ही मुक़रर,
तू ना कभी अपनेपन की महक से ज़िते?

* * *

हर कोई अपना ही फायदा ढूँढ़ता
बेबस लाचार यूँ लूटता रहता?

अपने फायदे के कायदे मे सब खामोश क्यूँ?
कौन भला बेवस के साथ होता?

* * *

अपने ही रस्ते चल परा कारीगर यूँ अकेले,
कई अपनी खुदगर्ज़ि मे मेरे संग ना चले?

फिर भी अपने ही दम किशन,
और दुर तलक चलने की जिद्द तो थी।

* * *

ये न सोच तू की?
बगैर तेरे चल नहीं पाऊँगा?

छलावे कर रोकोगे जितना,
उतनी ही दूर तलक चलकर जाऊँगा।

* * *

कई खुदगर्ज़ भी एसे एसे की?
अपने बुढ़े माँ बाप की हीफाज़त तक भूले?

क्यूँ भूल जाते हो की वो कभी, आज भी ताउम्र,
तुम्हारी ख़ुशीयों की खातिर अपना सब कुछ भूले?

* * *

मौत आयेगी ही, दफन भी हो जाऊँगा
कुछ पल और तो ज़ी लेने दे मेरे हमदर्द

इतनी ज़ल्दी भी किसलिये तुझे? की मै ना अब?
सांसे थम गयी, फिर भी दे शुकुने संग।

* * *

ईद में चाँद सी खिलखिलाहट, अपने पराये सबको दावत।
हर गली-मुहल्ले गुले-गुलज़ार हो।

पैगाम ए दोस्ती, आ गले मिल जा,
आज "किशन " के घर तेरा ईफतार हो।।

* * *